Peer reviewed Journal Impact Factor: 7.265 ISSN-2230-9578

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred Journal

June 2022 Volume-14 Issue-6

Chief Editor

Dr. R. V. Bhole

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.)

Address

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

CONTENTS

Sr. No.	Paper Title	Page No.
1	अविनाश ओगले यांच्या कवितेचे स्वरूप प्रा. अशोक रघुनाथ आलगोंडी, प्रा. डॉ. विनोद गायकवाड	1-7
2	जागतिक स्तरावर कोविड-१९ मुळे संक्रमित मानवाची आणि मानवी मृत्यूची स्थिती (विशेष संदर्भ- डिसेंवर२०१९ ते जानेवारी२०२२) प्रा. डॉ. तायनाथ व्ही.पी.	8-10
3	भारतीय विधीगीतातील स्त्रीचित्रण प्रा.डॉ.दत्तात्रय लक्ष्मण फलके	11-14
4	मराठी महाकवि वसन्त त्र्यम्बक शेवड़े प्रणीत 'अभिनव मेघदूत' गीतिकाव्य में प्रियसी चिन्तन एक समीक्षात्मक अध्ययन डॉ. हंसराज मीना (काबरा)	15-20
5	"कथाकार प्रा.माधव सरकुंडे यांच्या 'ताडमं' या कथा संग्रहातील व्यक्ती चित्रण" श्री. चेपूरवार गंगाधर नरसिंगराव	21-25
6	श्री अरविन्द की दिव्य जिवन की अवधारणा तथा अतिमानस संकल्पन संबंधी एक विवेचन Dr. Narendra V Raghatate	26-31
7	साहित्य में चित्रित किसान श्रीमती कंचन चौरसिया	32-34
8	पंचायती राज संस्था की महिला सशक्तिकरण में भूमिका मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले के विशेष संदर्भ में कांता वर्मा डॉ सुनील कुमार जांगिड़	35-40
9	महिला सक्षमीकरण प्रा. डॉ. शितोळे अनिल विजय, गायकवाड प्रतिभा शिवाजी	41-45
10	'प्राचीन भारतीय राजनीति और शासन' खेमराज आर्य	46-50
11	पुनर्वसनाचे शासनाचे धोरण व शिवना टाकळी प्रकाल्ग्रस्तांचे वास्तव प्रा. नंदकुमार कुकलारे	51-59
12	लोकमान्य टिळकांचे राष्ट्रीय शिक्षणविषयक विचार डॉ. रमाकांत शिवाजीराव शातलवार	60-62
13	हवामान वदलाचा महाराष्ट्रातील कापूस उत्पादनावर होणारा परिणाम डॉ. दिलीप फोके	63-64
14	डॉ. आंबेडकरांचे राष्ट्रीय जलधोरणातील योगदान अमरदिप दामोधर रामटेके	65-68
15	کشمیری زبان میں صحافت (میرسجادحُسین (گلشن پورہ ۔ ترال۔کشمیر	69-71
16	शाश्वत विकासाची उद्दिष्टे आणि भारताची कामगीरी : एक दृष्टीक्षेप प्रा.डॉ.पी.आर.मुठ्ठे प्रा.डॉ.एस.डी.आवाळे	72-76
17	लोकमान्य टिळकांचे राजकीय विचार आणि धोरण कुणाल दिलीप राठोड	77-81
18	वँकांमधील कर्ज योजनेचा उपयोग सर्वसामान्य व्यक्तीने कसा करावयाचा प्रा. मनोहर नारायण मोरे	82-83
19	डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का शैक्षिक दृष्टिकोण डॉ. सुरेखा पिपलानी	84-87
20	राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के सन्दर्भ में विद्यालयी पाठ्यचर्या में "लोकल फौर वोकल की उपादेयता"। रवीश चन्द्र पचौली	88-89
21	सिविल सेवा के छात्रों का जीवन संघर्ष: डार्क हॉर्स डॉ. वृषाली विकास मिणचेकर	90-93
22	नव्वदोत्तरी मराठी ग्रामीण कादंबरीतील शेतकरी जीवनदर्शन ! प्रदिप केशव चापले	94 -99
23	हवामान वदल समस्या, आव्हाने व उपाय प्रा. चंदनशिवे वर्षा वैजनाथ	100-103

'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, June 2022, Volume-14, Issue-6

साहित्य में चित्रित किसान

श्रीमती कंचन चौरसिया
शिक्षाशास्त्र विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
E-mail: kanchanchourasiya22@gmail.com

सार- भारत संरचानात्मक दृष्टि से गांवों का देष है, और सभी ग्रामीण समुदायों में अधिक मात्रा में कृषि कार्य किया जाता है, इसीलिए भारत का कृषि प्रधान देष की संज्ञा दी जाती है। आधुनिक युग में तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रगति ने मानव को अभूतपूर्व साधन दिए है जिनका प्रभाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों ही रूप में कृषक जीवन को निःसंदेह प्रभावित कर रहा है। किसानों की समस्याएँ पहले भी विद्यमान थी और आज भी है, बस इनका स्वरूप परिवर्तित होता रहता है। हिन्दी साहित्य में किसानों से जुड़े विषयों को अनेक विद्वानों ने अपने साहित्य में उठाया है। हिन्दी साहित्य में लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय किसानों की समस्याओं एवं परिवर्तित परिवेष में उनकी प्रत्येक स्थिति को उजागर किया है। दरअसल कृषक समाजों के लिए कृषि कोई धंधा नहीं बल्कि उनकी जीवन शैली है। किसान के लिए खेती कोई व्यवसाय नहीं अपितु यह उसकी जीवन शैली है। किसान अपने खेतों में उगने वाली फसलों को अपनी संतान की भ्रांति प्रेम, रक्षा एवं सुरक्षा करता है, इन फसलों का समृद्ध होना या फिर उजड़ना उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा होता है। किसान जीवन के इन समस्त पहलुओं को साहित्य में चित्रित कर, पाठकों के समक्ष कृषक जीवन को उजागर किया है।

जब से इस धरती पर जीवन की उत्पत्ति हुई है तब से ही कृषि, खेती समस्त मानव जाति एवं अन्य प्राणी जगत का मूलाधार रही है। किसान खेती करके खेती करके खाद्य सामग्री उत्पादित कर रहें है अर्थात किसान ही समस्त संसार के लिए भोजन हेतु खाद्यान फल सब्जियाँ और चारे का उत्पादन करते आ रहें है। इन धरतीपुत्र किसानों को अन्नदाता भी कहा जाता हैं। किसान हमारे जीवन की अन्न जैसी महत्वपूर्ण एवं मौलिक आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। मानव सभ्यता के विकास में कृषि की अमूल्य भूमिका रही है। मानव का अस्तित्व ही कृषि से ही संस्कृति का जन्म होता है। धरती और किसान में माँ बेटे का रिश्ता होता है। किसान किसी धर्म, जाति, रंग, सम्प्रदाय की सीमा में नहीं बंधा होता है, उसका कर्म ही किसान की पहचान है। किसान न सिर्फ खेती अपितु पशुपालन, वृक्षारोपण और पर्यावरण संरक्षण भी करता है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि किसान ही प्रकृति का संरक्षक है।

साहित्य में समाज के महत्वपूर्ण वर्ग एंव मानव जाति के अन्नदाता कहे जाने वाले किसान के जीवन के प्रत्येक पहलुओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को दर्पण दिखाने का कार्य किया है। हिन्दी साहित्य में किसन पर केन्द्रित अनेक महत्वपूर्ण रचनाएं, गद्य एवं पद्य के रूप में हमें प्राप्त होती है।

भारत की अर्थव्यवस्था ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था रही है। भारत में प्रचुर प्राकृतिक संपदा थी, उसने यहाँ पर तरह तरह की खेती को समृद्ध किया है। भारत में भोगोलिक विभिन्नता के कारण यहां सांस्कृतिक एवं सामाजिक भिन्नता पाई जाती है। भारत की अर्थव्यवस्था कृषि कार्यों पर सबसे अधिक निर्भर करती है। इसके साथ ही साथ भारत सांस्कृतिक रूप से भी बहुत सम्पन्न है। भारत में अनेकों त्यौहार एवं पर्व कृषि आधारित है, यहाँ लोग प्रकृति के विभिन्न रूपों को भी उत्सव के रूप में खुषी से मनाते है, जैसे सूर्य के मकर राषि में प्रवेष करने पर मकर संक्रांति बसंत श्रतु के आगमन पर बसंत पंचमी अनाज की बुआई, कटाई पर बिहू लोहड़ी पोंगल, ओड़म, आदि मनाए जाते हैं। तात्पर्य यह है यह कि संस्कृति वह प्राण है जिसमें जीवन के होने का आभास होता है। किसान या कृषक कोई सामान्य मनुष्य नहीं होता, वह एक ऐसा प्राणी होता है जिसमें समूचे जगत को पालने की क्षमता उसके संस्कारों से मिली होती है।

भारत में अधग्वैदिक काल से ही कृषि पारिवारिक उद्योग रहा है। मानव सभ्यता के आरंभ से ही षिकार तत्पश्चात कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीड़ की हड्डी रही है और इसका साहित्य से अटूट संबंध रहा है। कविता या साहित्य मनुश्य की मनुश्य सर्जनात्मक अभिव्यक्ति की सबसे प्राचीन विद्या है और कृषि कार्य भी प्राचीनतम पेषा रहा है। वेदों में कृषि कार्य को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है।

हिन्दी साहित्य में गद्य एवं पद्य दोनों ही विद्याआं में रचनाकारों ने अपनी लेखनी से किसानों के जीवन को अपनी रचनाओं चित्रित किया है। हिन्दी कविता में स्वतंत्रता से पूर्व भक्तिकाल से ही कृषक जीवन पर कविताएँ लिखी जाने लगी थी। कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, ने अपनी दिव्य वाणी के माध्यम से तात्कालीन समय में किसानों की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है। स्वतंत्रतापूर्व हिन्दी कविताओं में सबसे पहले कबीरदास जी ने किसान जीवन संबंधी पद लिखे। हिन्दी साहित्य के उपन्यासकारों ने सामाजिक और आंचलिक उपन्यासों के कार्य विषय के रूप में किसान जीवन को प्राथमिकता दी तथा भारतीय किसान जीवन की विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों का यथार्थ अंकन किया है-

हिन्दी साहित्य में नार्गाजुन ने भारतीय किसानों की दयनी अवस्था को नागार्जुन ने दर्शाया है।